प्लानिंग बगैर बसेंगे तो हादसे ही होंगे

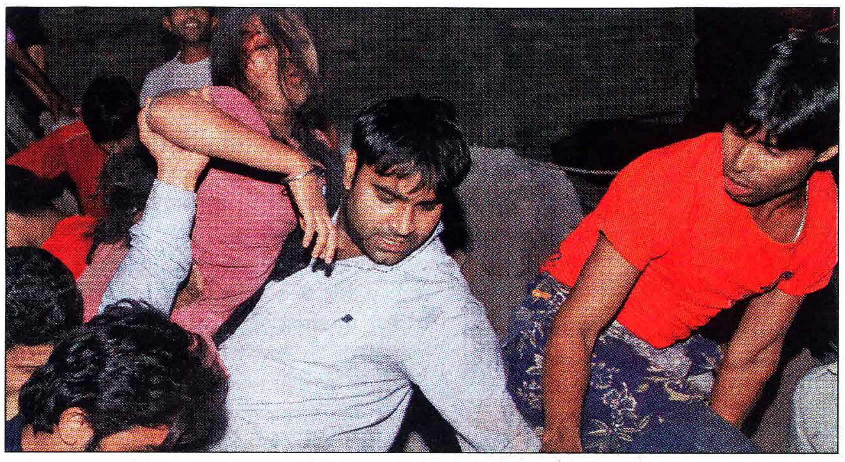

- राजधानी की दो तिहाई आबादी रहती है अनियोजित इलाकों में
- मास्टर प्लान-2021 में है रीप्लान और रीडेवेलपमेंट की योजना
- आपदा की दृष्टि से ईस्ट दिल्ली और पुरानी दिल्ली सबसे ज्यादा खतरे में
- इन इलाकों की संकरी गलियों तक में नहीं पहुंचाई जा सकती मदद

प्रमुख संवाददाता। लक्ष्मी नगर में इमारत गिरने से हुई कई दर्जन लोगों की मौतों ने पूरे शहर की प्लानिंग पर ही सवालिया निशान खड़ा कर दिया है। टाउन प्लानरों के मुताबिक राजधानी की दो तिहाई आबादी अनियोजित इलाकों में रहती हैं। जहां न तो सुनियोजित तरीके से कॉलोनियों की बसावट हुई और न ही इमारतों का कोई नक्शा बना है। संकरी गलियों ने इन कॉलोनियों को और भी खतरनाक बना दिया है। भूकंप या किसी भी आपदा की नजर से भी ईस्ट दिल्ली और पुरानी दिल्ली के इलाके बेहद खतरनाक जोन में हैं। राजधानी से महज 200 किलोमीटर की दूरी पर ही शिवालिक की पहाड़ियां हैं। यहां तेजी से जमीन के अंदर हलचल चल रही है। अगर कोई बड़ा भूकंप आता है तो सबसे ज्यादा असर ईस्ट और पुरानी दिल्ली पर पड़ेगा।

पूर्व टाउन प्लानर आर. जी. गुप्ता मानते हैं कि लक्ष्मी नगर जैसे हादसों के लिए हमारी प्लानिंग जिम्मेदार हैं। जब तक प्लान करके कॉलोनियां नहीं बनेंगी तब तक ऐसे हादसों की गुंजाइश रहेगी। राजधानी का केवल एक तिहाई हिस्सा ही प्लानिंग करके बसा है। बाकी के दो तिहाई हिस्से में अवैध कॉलोनियां, अवैध नियमित कॉलोनियां, अवैध औद्योगिक कॉलोनियां, शहरीकृत गांव, ग्रामीण गांव, नरेला और नजफगढ़ जैसे सेंसर टाउन जिनकी आबादी 50 हजार से ज्यादा बढ़ गई, स्लम एरिया, झुग्गी क्लस्टर, पुनर्वास कॉलोनियां बसी हैं। इनकी कोई प्लानिंग नहीं की गई है। राजधानी की दो तिहाई आबादी भी इन ही इलाकों में रहती है। मास्टर प्लान-2021 में इन इलाकों के लिए साफ शब्दों में री प्लान, री डेवलपमेंट और दोबारा निर्माण की बात कही गई है। इन कॉलोनियों में बिजली-पानी, सीवर और ड्रेनेज सिस्टम की सुविधा की भी बात कही गई है। इन कॉलोनियों को फिर से प्लानिंग करके बसाना होगा, तभी राजधानी को ऐसे खतरों से बचाया जा सकता है। ईस्ट दिल्ली के मौजपुर और गोंडा के इलाके तो लक्ष्मी नगर इमारत हादसे भी खतरनाक हैं। सड़कें संकरी होने के कारण यहां कोई भी मदद पहुंचाने में बेहद दिक्कत का सामना करना पड़ता है। यही कारण है कि कोई भी हादसा होते ही भारी जान-माल का नुकसान भुगतना पड़ता है।

आदमी क्या पक्षी भी फंस गए थे, इस तोते को बचा लिया गया

घायल युवक को ले जाते परिजन

इस औरत की भी जान बच गई पर गम जिन्दगी भर का मिल गया

रोज होते हैं अवैध निर्माण, सब जानकर अनजान हैं

संवाददाता। पूर्वी दिल्ली की तरह बाहरी दिल्ली में भी बड़े पैमाने पर अवैध बिल्डिंग बन रही हैं, लेकिन संबंधित अधिकारी अनजान बने हुए हैं। दिल्ली पुलिस, एमसीडी और दिल्ली सरकार के अधिकारी इन अवैध बिल्डिंगों के निर्माण को रोकने के लिए अपनी जिम्मेदारी भी नहीं निभा रहे हैं।

बाहरी दिल्ली के नरेला, बवाना, कंझावला, अमन विहार, रमा विहार, राजीव नगर, बेगम विहार, बुद्ध विहार, नजफगढ़, नांगलोई, मुंडका, सिरसपुर, स्वरूप नगर, रिठाला, विजय विहार, हरगोविंद विहार, सन्नौठ, अलीपुर, उत्तम नगर, पालम, द्वारका इलाके में महावीर एंकलेव, ककरोला, पालम, दक्षिणी दिल्ली के संगम विहार, उत्तरी मुकुन्दपुर, संत नगर, बुराड़ी, झड़ौदा सहित कई कॉलोनियों में बिल्डिंग निर्माण के लिए अनुमति नहीं ली जाती है। इन कॉलोनियों में कई पांच-छह मंजिली बिल्डिंग बनाई गई हैं और कई बिल्डिंग बनाई जा रही हैं। आश्चर्य की बात यह है कि शिकायत के बाद भी पुलिस कोई कार्रवाई नहीं करती। एमसीडी के अधिकारी यह कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं कि यह इलाका उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं है।

दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करेगी MCD

संवाददाता। लक्ष्मी नगर बिल्डिंग हादसे के बाद एमसीडी की नींद खुली है। अब उन अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने की बात की जा रही है, जिनके कार्यकाल में बिल्डिंग बनी थी। निगम की स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन योगेंद्र चंदोलिया का कहना है कि मामले की जांच गंभीरता से की जाएगी। यह पता लगाया जाएगा कि जिस बिल्डिंग में हादसा हुआ, वह किस आधार पर बनाई गई थी। यदि अवैध निर्माण किया गया था, तो किन अधिकारियों को इसे रोकने की जिम्मेदारी थी? ऐसे अधिकारियों की पहचान करके उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

श्री चंदोलिया का कहना है कि अवैध निर्माण को रोकने के लिए स्टैंडिंग कमेटी की बैठक में विशेष रूप से विचार किया जाएगा। अवैध निर्माण हर हाल में रोका जाएगा। उनका कहना है कि राजधानी वासियों के जानमाल की सुरक्षा एमसीडी की प्राथमिकता है। इस पर अमल किया जाएगा। उधर, एमसीडी में विपक्ष के नेता जय किशन शर्मा ने हादसे पर दुख प्रकट किया है। उनका आरोप है कि एमसीडी के कई अधिकारी बेकाबू हो गए हैं। सत्ताधारी बीजेपी नेताओं के पास ऐसा कोई प्लान नहीं है कि उन पर अंकुश लगाया जा सके। एमसीडी को भ्रष्टाचार का दीमक लग गया है। इसी वजह से लगातार हो रहे अवैध निर्माण से अधिकारी अनजान बने हुए हैं। उनका कहना है कि ऐसी कोई ठोस योजना बनानी चाहिए, ताकि भविष्य में इस प्रकार के हादसे को रोका जा सके।

पांच दिन से झुकी बिल्डिंग तोड़ने का काम तेज

लक्ष्मी नगर में पांच मंजिला इमारत के गिरने के बाद एमसीडी ने पालम इलाके में कई दिनों से झुकी पांच मंजिली बिल्डिंग को तोड़ने का अभियान तेज कर दिया है। महाबीर एनक्लेव गली नंबर-3 में स्थित यह बिल्डिंग शुक्रवार से झुकी है। बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर पार्किंग है, जबकि बाकी के चार फ्लोर पर अलग-अलग परिवार रहते हैं। बिल्डिंग झुकने की सूचना शुक्रवार रात लोगों ने पुलिस को सूचना दी थी। पुलिस ने आसपास के इलाकों की घेराबंदी कर दी, लेकिन एमसीडी की नींद शनिवार को 24 घंटे बाद खुली। एमसीडी के लेबर उस हिस्से को तोड़ रहे हैं, जिधर की तरफ बिल्डिंग झुकी हुई है। एमसीडी का कहना है कि बुलडोजर लगाने से ज्यादा नुकसान हो सकता है। मलबा बगल के मकान पर भी गिरेगा। बुलडोजर इतना बड़ा भी नहीं है कि उसे ऊपरी मंजिल तक पहुंचाया जा सके। इसलिए लेंटर को छोड़ उसके बीच बनी दीवार को तोड़ा जा रहा है। नवीन

किलर बिल्डिंग...

पहले पेज का शेष

दिल्ली के उप राज्यपाल तेजेंद्र खन्ना ने राजधानी की सभी इमारतों के सर्वे का निर्देश दिया है। चीफ मिनिस्टर शीला दीक्षित हादसे की जांच के पहले ही आदेश दे चुकी है। जांच समिति का गठन कर दिया गया है। आज सुबह वह घटनास्थल पर पहुंची उन्होंने मरने वालों के परिवार वालों को 2-2 लाख रुपए और घायलों को 50-50 हजार रु. मुआवजे की घोषणा की।

इस हादसे में जिन बच्चों के मां-बाप मारे गए हैं उन्हें एक-एक लाख रुपए और दिए जाएंगे। दिल्ली के वित्त मंत्री डॉ. एके वालिया के मुताबिक यह हादसा बाढ़ का पानी घुस आने के कारण हुआ है और यह समस्या पिछले डेढ़ महीने से इस इलाके के हर मकान में आ रही है। मार्जिनल बंध पुश्ता नंबर एक के आसपास बनी कालोनियों के मकानों को बचाने के लिए पूरी योजना बनाई जा रही है।

कल रात 8 बजे लक्ष्मी नगर के ललिता पार्क की 5 मंजिला इमारत ढह गई थी। जानकारी के मुताबिक इस इमारत में 400 के आसपास लोग रहते थे। बाढ़ का पानी बेसमेंट में घुस जाने के कारण इमारत की नींव कमजोर हो गई थी, जिसके कारण यह इमारत भरभराकर गिर गई। इमारत की मेनटेनेंस भी नहीं की जा रही थी। इमारत में दबे लोगों को राजधानी के 4 अस्पतालों में पहुंचा गया। दिल्ली की हेल्थ मिनिस्टर डॉ. किरण वालिया के मुताबिक लोक नायक जय प्रकाश अस्पताल में 41 लोगों की मौत की पुष्टि की गई है, जबकि लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल में 16, डॉ. हेडगेवार अस्पताल में 3 मौतों की पुष्टि की गई है। अभी भी इन अस्पतालों में करीब 80 से ज्यादा लोगों का इलाज चल रहा है। मलबे से दबे लोगों को निकालने के लिए दिल्ली फायर, दिल्ली पुलिस, डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी, एमसीडी, रेवेन्यू डिपार्टमेंट, इंडियन तिब्बत बॉर्डर पुलिस के 300 से ज्यादा लोग राहत कार्य में जुटे हुए हैं। एमसीडी के डायरेक्टर (इनफारमेशन एंड पब्लिसिटी) दीप माथुर के मुताबिक एमसीडी के डिप्टी कमिश्नर और चीफ इंजीनियर जांच टीम को पूरा सहयोग करेंगे। एमसीडी की कोशिश है की शीघ्र ही यहां से मलबा हटा लिया जाए, ताकि दबे लोगों को बाहर निकाला जा सके। गली संकरी होने के कारण दिक्कतें आ रही हैं।

मलिक का...

पहले पेज का शेष

बताया जा रहा है कि नकली सीमेंट बनाने से लेकर अवैध तरीके से इमारतें बनाने तक का काम अमृत पाल सिंह ने किया। बावजूद इसके पुलिस ने उसकी इमारत में क्या चल रहा है, नजर रखनी जरूरी नहीं समझा। दुर्घटना के कई घंटे बीत जाने के बावजूद पुलिस अब तक उसका सुराग लगाने में कामयाब नहीं हो पाई है। बचाव और राहत का काम अब भी जारी है। इसमें आईटीबीपी के साथ साथ एनडीआरएफ को भी लगाया गया है। इस इमारत में 70 कमरे थे, जिनमें अधिकांश रिक्शा चलाने वाले और मजदूरी करने वाले रहते थे।